Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आदिवासी परिवारों की महिलाओं की आर्थिक-सामाजिक भूमिका

डॉ. राकेश कुमार चौहान*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) सरदार वल्लभ भाई पटेल शासकीय महाविद्यालय, कुक्षी (म.प्र) भारत

शोध सारांश – मानव संसाधन का आधा हिस्सा महिलाएँ हैं और वे इस प्रकार देश की आर्थिक सम्पदा के आधे हिस्से की मालिक है। यदि मानव संसाधन के इस आधे हिस्से की उपेक्षा की जाए तो देश की प्रगति में रूकावट अवश्यभावी होगी। भारत सरकार ने विकास गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका को पहचाना है और उनके लिए कई सकारात्मक कदम उठाये हैं ताकि उन्हें विकास की मुख्यधारा में लाया जा सके। सरकार के इन कदमों से महिलाओं की सामजिक-आर्थिक दशाओं में प्रत्यक्ष बदलाव दिखाई पड़ने लगा है।

शब्द कुंजी – आदिवासी परिवार, महिलाएँ, आर्थिक-सामाजिक भूमिका।

प्रस्तावना – जब बात आदिवासी वर्ग की होती है, तो महिलाओं की आर्थिक स्थिति का महत्व और भी बढ़ जाता है। इस वर्ग के ज्यादातर परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हैं। इस कारण से परिवार के पालन-पोषण में महिलाओं द्वारा भी आर्थिक कार्य करके महत्वपूर्ण योगदान दिया जाता है। ग्रामीण आदिवासी परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने से उन्हें परिवार के पालन-पोषण में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति से निपटने के लिए उनके परिवार की महिलाएँ भी आर्थिक योगदान देती हैं।

शोध विषय का चयन – प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य झाबुआ जिले का चयन किया गया है। झाबुआ जिले **'आदिवासी परिवारों की महिलाओं की आर्थिक-सामाजिक भूमिका'** विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है। आदिवासी परिवारों की महिलाओं की आर्थिक-सामाजिक योगदान से संबंधित पहलूओं का अध्ययन करने के लिए इस शोध विषय का चयन शोधार्थी द्वारा किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. आदिवासी परिवारों की महिलाओं की आर्थिक भूमिका का अध्ययन करना।
2. आदिवासी परिवारों की महिलाओं कार्यशीलता का अध्ययन करना।

अध्ययन का महत्व – इस शोध के माध्यम से आदिवासी परिवारों की महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक भूमिका से संबंधित महत्वपूर्ण पहलूओं की जानकारी प्राप्त हो सकेगी, जो कि आदिवासी महिलाओं के विकास से संबंधित नीति निर्धारकों एवं नवीन शेधकर्ताओं के लिए सहायक होगी।

अध्ययन का क्षेत्र– इस शोध कार्य के लिए मध्यप्रदेश के आदिवासी बाहुल्य झाबुआ जिले का चयन किया गया है। इस जिले में सर्वधिक जनजाति जनसंख्या निवास करती है।

निदर्षन प्रक्रिया

1. **अध्ययन का समग्र –** इस शोध कार्य के समग्र के रूप में अध्ययन हेतु चयनित आदिवासी आधिक्य झाबुआ जिले के जनजाति परिवारों को शामिल किया गया है।
2. **अध्ययन की इकाई –** अध्ययन की इकाई के रूप में झाबुआ जिले के जनजाति परिवारों में से कुल 360 आदिवासी परिवारों का चयन उत्तरदाताओं के रूप में दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

उत्तरदाताओं का चयन– शोध कार्य की पूर्ति के लिए उत्तरदाताओं का चयन शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर **सोद्देश्य प्रतिचयन विधि** से किया गया है। झाबुआ जिले से कुल 360 आदिवासी परिवारों का चयन **सोद्देश्य प्रतिचयन विधि** से किया गया है।

आँकड़ों का संकलन– ग्रामीण आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अध्ययन से संबंधित इस शोध की पूर्ति के लिए प्राथमिक आँकड़ों एवं द्वितीयक आँकड़ों का संकलन किया गया है।

आँकड़ों के संकलन के स्त्रोत – अध्ययन क्षेत्र के आदिवासी उत्तरदाताओं से संकलित किए गए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का वर्गीकरण, श्रेणीकरण एवं सारणीकरण के बाद में तथ्यों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए, जिसके आधार पर शोध कार्य की पूर्ति की गई है।

अध्ययन के निष्कर्ष:

1. महिलाओं द्वारा आर्थिक कार्य करने के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार लगभग 89 प्रतिशत आदिवासी परिवारों की वयस्क महिलाएँ कार्यशील हैं तथा शेष परिवारों की महिलाएँ या तो कार्यशील नहीं हैं या वयस्क नहीं है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि अधिकतर आदिवासी परिवारों की महिलाएँ आर्थिक कार्य करके अपने परिवार के भरण-पोषण में योगदान देती हैं। जिससे उनके परिवार के पालन-पोषण में कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़े। इन परिस्थितियों में आदिवासी परिवारों में महिलाओं की भूमिका का महत्व बढ़ जाता है। अत: आर्थिक दृष्टि से परिवार के भरण-पोषण में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।
2. महिलाओं के आर्थिक कार्य के विभिन्न क्षेत्रों के संबंध में प्राप्त समंकों के अनुसार लगभग 91 प्रतिशत महिलाएँ कृषि-मजदूरी करके अपने परिवार के पालन पोषण में अपना आर्थिक योगदान देती हैं तथा शेष महिलाएँ अन्य कार्यों जैसे निर्माण कार्य, सब्जी बेचना आदि माध्यम से अपना आर्थिक योगदान देती हैं। इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में कृषि कार्य में मजदूरी की उपलब्धता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है और इसी कारण

से ग्रामीण क्षेत्र की अधिकतर महिलाएँ कृषि क्षेत्र में मजदूरी करती हैं। लेकिन दूसरी ओर कुछ महिलाएँ अन्य कार्य जैसे निर्माण कार्य, सब्जी बेचना आदि के द्वारा परिवार के पालन-पोषण में योगदान देती हैं।

3. विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक कार्य करने वाली महिलाओं को प्रतिदिन प्राप्त होने वाली मजदूरी की राशि के संबंध में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार कृषि मजदूरी में संलग्न लगभग 82 प्रतिशत महिलाओं को प्रतिदिन रू. 25-50 मजदूरी की राशि प्राप्त होती है तथा लगभग 17 प्रतिशत महिलाएँ रू. 50-75 प्रतिदिन प्राप्त करती है। वहीं दूसरी ओर जो महिलाएँ अन्य कार्यों में संलग्न हैं, उनमें से लगभग 84 प्रतिशत महिलाओं को भी प्रतिदिन रू. 25-50 मजदूरी की राशि प्राप्त होती है। अन्य कार्यों में संलग्न शेष महिलाओं को प्रतिदिन रू. 50-75 मजदूरी की राशि मिलती है।

4. विभिन्न व्यावसायिक-संरचना वाले आदिवासी परिवारों की कार्यशील महिलाओं के संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार कृषि करने वाले आदिवासी परिवारों की लगभग 94 प्रतिशत महिलाएँ कृषि मजदूरी तथा शेष महिलाएँ अन्य क्षेत्र में कार्य करती हैं। इसी प्रकार से विभिन्न व्यवसाय एवं मजदूरी करने वाले परिवारों की भी अधिकतर महिलाएँ कृषि मजदूरी ही करती हैं। लेकिन नौकरी करने वाले परिवार की महिलाएँ कृषि मजदूरी की बजाय अन्य कार्य करती हैं।

5. महिलाओं को आर्थिक कार्य करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कारक उन्हें प्रभावित करते हैं। इस संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार दोनों तहसीलों की अधिकतर महिलाएँ अपने परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति होने के कारण आर्थिक कार्य करती हैं। लेकिन दूसरी कुछ महिलाएँ अन्य कारकों जैसे मंहगाई बढ़ना, आय कम होना आदि के परिणामस्वरूप भी आर्थिक कार्य करती हैं। परिवार का बड़ा आकार होना भी इस स्थिति के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।

6. रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में संलग्न महिलाओं को समस्याओं का सामना करना पड़ता है या नहीं। इस संबंध में प्राप्त तथ्यों के अनुसार आदिवासी परिवारों की लगभग 82 प्रतिशत महिलाओं को उनके रोजगार में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर लगभग 18 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आती है।

7. महिलाओं को अपने रोजगार के क्षेत्र में कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है ? इस संबंध में प्राप्त आँकड़ों के अनुसार लगभग 71 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार में अन्य समस्याओं जैसे लगातार एवं समय पर काम न मिलना आदि का सामना करना पड़ता है। लगभग 23 प्रतिशत महिलाओं को जो मजदूरी दी जाती है, वह अपर्याप्त होती है। वहीं लगभग 6 प्रतिशत महिलाओं के समक्ष सबसे बड़ी समस्या यह है कि जहाँ पर वे कार्य करती है, वहाँ पर निर्धारित समय से अधिक काम लिया जाता है।

8. महिलाओं के जीवन-स्तर सूचकांक से जुडे विभिन्न पहलूओं का विश्लेषण करने पर जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, उनके अनुसार पूर्व की तुलना में अब महिलाओं के आत्म सम्मान (Mean Score 3.19) में काफी वृद्धि हुई है तथा इस कारण से उनके परिवार में अब उनके सम्मान (Mean Score 3.05) में भी वृद्धि हुई है और अब उन्हें समान दर्जा दिया जाने लगा है। इनके जीवन की गुणवत्ता के अन्य पहलूओं को देखें तो स्पष्ट है कि अब इनके रोजगार के अवसरों (Mean Score 3.00) में वृद्धि हो रही है। इसके परिणाम स्वरूप इनके आय के स्तर (Mean Score 2.96) में भी सुधार हुआ है। आय-स्तर में वृद्धि का यह परिणाम है कि इन महिलाओं की पारिवारिक बचत (Mean Score 2.94) भी बढ़ने लगी है, जो एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का सूचक है।

विभिन्न पक्षों के संबंध में इनकी निर्णय लेने की क्षमता (Mean Score 2.92) में भी वृद्धि हुई है और इस कारण से उनकी सामाजिक गतिविधियाँ (Mean Score 2.90) बढ़ने लगी है अर्थात् उनकी सामाजिक सहभागिता में वृद्धि हुई है। स्वास्थ्य सुविधाओं (Mean Score 2.76) तथा शिक्षा के स्तर (Mean Score 2.64) के संबंध में परिणाम उत्साहजनक नहीं रहे हैं, क्योंकि जीवन की गुणवत्ता के ये दोनों पहलुओं में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। इसका आशय यह है कि महिलाओं की शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सुविधाओं में अभी और सुधार करना आवश्यक है। अत: इस ओर ध्यान देकर इन दोनों महत्वपूर्ण पहलूओं में सुधार का प्रयास करना होगा, तभी उनके जीवन-स्तर सूचकांक में परिवर्तन लाया जा सकता है।

उपसंहार – अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट है कि महिलाओं को आर्थिक क्षेत्र में कार्यशील करने वाले अनेक कारक प्रभावशील हैं। लेकिन कमजोर आर्थिक स्थिति सबसे महत्वपूर्ण कारक है। इसके साथ ही परिवार का बड़ा आकार, महँगाई बढ़ना, आय कम होना आदि भी महत्वपूर्ण कारक है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति को समस्याओं का सामना करना पड़ता है और कार्यशील आदिवासी महिलाओं में से दो-तिहाई से अधिक महिलाओं को अपने रोजगार के क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सिंह, दीपा जैन (2007) भारत में महिलाएँ-सांख्यिकीय प्रोफाइल, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 1
2. आहूजा, राम (2005), भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली. पृ. 122

****